■ व्यंग्य

एक गोभक्त से भेंट

-हरिशंकर परसाई

एक शाम रेलवे स्टेशन पर स्वामी जी के दर्शन हो गए। ऊंचे, गोरे और तगड़े साधु थे। चेहरा लाल। गेरुए रेशमी कपड़े पहने थे। पांवों में खड़ाऊं। हाथ में सुनहरी मूठ की छड़ी। साथ एक छोटे साइज़ का किशोर संन्यासी था। उसके हाथ में ट्रांजिस्टर था और वह गुरु को रफी के गाने सुनवा रहा था।

मैंने पूछा - स्वामीजी, कहां जाना हो रहा है?

स्वामी जी बोले - दिल्ली जा रहे हैं बच्चा।

मैंने कहा - स्वामीजी, मेरी काफ़ी उम्र है। आप मुझे 'बच्चा' क्यों कहते हैं?

स्वामीजी हंसे। बोले - बच्चा, तुम संसारी लोग होटल में साठ साल के बूढ़े बैरे को 'छोकरा' कहते हो न। उसी तरह हम तुम संसारियों को 'बच्चा' कहते हैं। यह विश्व एक विशाल भोजनालय है जिसमें हम खाने वाले हैं और तुम परोसने वाले। इसीलिए हम तुम्हें 'बच्चा' कहते हैं। बुरा मत मानो। संबोधन मात्र है।

स्वामीजी बात से दिलचस्प लगे। मैं उनके पास बैठ गया। वे भी बेंच पर पालथी मार कर बैठ गये। सेवक को गाना बंद करने के लिए कहा।

कहने लगे - बच्चा, धर्मयुद्ध छिड़ गया है। गोरक्षा-आंदोलन तीव्र हो गया है। दिल्ली में संसद के सामने सत्याग्रह करेंगे।

मैंने कहा - स्वामीजी, यह आंदोलन किस हेतु चलाया जा रहा है?

स्वामीजी ने कहा - तुम अज्ञानी मालूम होते हो, बच्चा। अरे, गौ की रक्षा करना है। गौ हमारी माता है। उसका वध हो रहा है।

मैंने पूछा - वध कौन कर रहा है?

वे बोले - विधर्मी कसाई।

मैंने कहा - उन्हें वध के लिए गौ कौन बेचते हैं? वे आपके सधर्मी गोभक्त ही हैं न?

स्वामीजी ने कहा - सो तो हैं। पर वे क्या करें? एक तो गाय व्यर्थ खाती है, दूसरे बेचने से पैसे मिल जाते हैं।

मैंने कहा - यानी पैसे के लिए माता का जो वध करा दे, वही सच्चा गो-पूजक हुआ।

स्वामीजी मेरी तरफ़ देखने लगे। बोले - तर्क तो अच्छा कर लेते हो, बच्चा। पर यह तर्क की नहीं, भावना की बात है। इस समय जो हज़ारों गोभक्त आंदोलन कर रहे हैं, उनमें शायद ही कोई गौ पालता हो। पर आंदोलन कर रहे हैं। यह भावना की बात है।

स्वामी जी और 'बच्चा' की बातचीत

-स्वामीजी, आप तो गाय का दूध ही पीते होंगे?

-नहीं बच्चा, हम भैंस के दूध का सेवन करते हैं। गाय कम दूध देती है और वह पतला होता है। भैंस के दूध की बढ़िया गाढ़ी मलाई और रबड़ी बनती है।

-तो क्या सभी गोभक्त भैंस का दूध पीते हैं?

-हां बच्चा, लगभग सभी।

-तब तो भैंस की रक्षा हेतु आंदोलन चलाना चाहिए। भैंस का दूध पीते हैं, मगर माता गौ को कहते हैं। जिसका दूध पिया जाता है, वही तो माता कहलायेगी।

-यानी भैंस को हम माता...नहीं बच्चा, तर्क ठीक है, पर भावना दूसरी है।

-स्वामीजी, हर चुनाव के पहले गोभक्ति क्यों ज़ोर पकड़ती है? इस मौसम में कोई ख़ास बात है क्या?

-बच्चा, जब चुनाव आता है, तब हमारे नेताओं को गोमाता सपने में दर्शन देती है। कहती है-बेटो, चुनाव आ रहा है। अब मेरी रक्षा का आंदोलन करो। देश की जनता अभी मूर्ख है। मेरी रक्षा का आंदोलन कर के वोट ले लो। बच्चा, कुछ राजनीतिक दलों को गोमाता वोट दिलाती है, जैसे एक दल को बैल वोट दिलाते हैं। तो ये नेता एकदम आंदोलन छेड़ देते हैं और हम साधुओं को उसमें शामिल कर लेते हैं। हमें भी राजनीति में मज़ा आता है। बच्चा, तुम हमसे ही पूछ रहे हो। तुम भी तो कुछ बताओ। तुम कहां जा रहे हो?

-स्वामीजी, मैं 'मनुष्य-रक्षा आंदोलन' में जा रहा हूं।

-यह क्या होता है, बच्चा?

-स्वामीजी, जैसे गाय के बारे में मैं अज्ञानी हूं, वैसे ही मनुष्य के बारे में आप हैं।

-पर मनुष्य को कौन मार रहा है?

-इस देश के मनुष्य को सूखा मार रहा है, अकाल मार रहा है, महंगाई मार रही है। मनुष्य को मुनाफ़ाखोर मार रहा है, काला बाज़ारी मार रहा है। भ्रष्ट शासन तंत्र मार रहा है। सरकार भी पुलिस की गोली से चाहे जहां मनुष्य को मार रही है। बिहार के लोग भूखे मर रहे हैं।

-बिहार? बिहार शहर कहां है, बच्चा?

-बिहार एक प्रदेश है, राज्य है।

-अपने जम्बूद्वीप है न?

-स्वामीजी, इसी देश में है, भारत में।

-यानी आर्यावर्त में?

-जी हां, ऐसा ही समझ लीजिए। स्वामीजी, आप भी मनुष्य-रक्षा आंदोलन में शामिल हो जाइए न।

-नहीं बच्चा, हम धर्मात्मा आदमी हैं। हमसे यह नहीं होगा। एक तो मनुष्य हमारी दृष्टि में बहुत तुच्छ है। वे लोग ही तो हैं, जो यह कहते हैं कि मंदिरों और मठों में लगी जायदाद को सरकार ले ले। बच्चा, तुम मनुष्य को मरने दो। गौ की रक्षा करो। कोई भी जीवधारी मनुष्य से श्रेष्ठ है। तुम देख नहीं रहे हो, गोरक्षा के जुलूस में जब झगड़ा होता है, तब मनुष्य ही मारे जाते हैं। एक बात और है, बच्चा। तुम्हारी बात से प्रतीत होता है कि मनुष्य-रक्षा के लिए मुनाफ़ाखोर और कालाबाज़ारी से बुराई लेनी पड़ेगी। यह हमसे नहीं होगा। यही लोग तो गो-रक्षा आंदोलन के लिए धन देते हैं। हमारा मुंह धर्म ने बंद कर दिया है।

-खैर, छोड़िये मनुष्य को। गोरक्षा के बारे में मेरी ज्ञान-वृद्धि कीजिए। एक बात बताइए। मान लीजिए, आपके बरामदे में गेहूं सूख रहे हैं। तभी एक गोमाता आ कर गेहूं खाने लगती है। आप क्या करेंगे?

-बच्चा, हम उसे डंडा मार कर भगा देंगे।

-पर स्वामीजी, वह गोमाता है न। पूज्य है। बेटे के गेहूं खाने आई है। हाथ जोड़ कर स्वागत क्यों नहीं करते कि आ माता, मैं कृतार्थ हो गया। सब गेहूं खा जा।

-बच्चा, तुम हमें मूर्ख समझते हो?

-नहीं, मैं आपको गोभक्त समझता

-पर स्वामीजी, यह कैसी पूजा है कि गाय हड्डी का ढांचा लिए हुए मुहल्ले में काग़ज़ और कपड़े खाती फिरती है और जगह-जगह पिटती है।

-सो तो हम हैं, पर इतने मूर्ख भी नहीं हैं कि गाय को गेहूं खा जाने दें।

-पर स्वामीजी, यह कैसी पूजा है कि गाय हड्डी का ढांचा लिए हुए मुहल्ले में काग़ज़ और कपड़े खाती फिरती हे और जगह-जगह पिटती है।

-बच्चा, यह कोई अचरज की बात नहीं है। हमारे यहां जिसकी पूजा की जाती है, उसकी दुर्दशा कर डालते हैं। यही सच्ची पूजा है। नारी को भी हमने पूज्य माना और उसकी जैसी दुर्दशा की सो तुम जानते ही हो।

-स्वामीजी, दूसरे देशों में लोग गाय की पूजा नहीं करते, पर उसे अच्छी तरह रखते हैं और वह ख़ूब दूध देती है।

-बच्चा, दूसरे देशों की छोड़ो। हम उनसे बहुत ऊंचे हैं। देवता इसीलिए सिर्फ़ हमारे यहां अवतार लेते हैं। दूसरे देशों में गाय दूध के उपयोग के लिए होती है, हमारे यहां वह दंगा करने, आंदोलन करने के लिए होती है। हमारी गाय और गायों से भिन्न है।

-सवामीजी, और सब समस्याओं को छोड़ कर आप लोग इसी एक काम में क्यों लग गये हैं?

-इसी से सब हो जाएगा, बच्चा। अगर गोरक्षा का क़ानून बन जाए, तो यह देश अपने आप समृद्ध हो जाएगा। फ़िर बादल समय पर पानी बरसायेंगे, भूमि ख़ूब अन्न देगी और कारखाने बिना चले भी उत्पादन करेंगे। धर्म का प्रताप तुम नहीं जानते। अभी जो देश की दुर्दशा है, वह गौ के अनादर के कारण है।

-स्वामीजी, पश्चिम के देश गौ की पूजा नहीं करते, फिर भी समृद्ध हैं।

-उनका तो भगवान ही नहीं है, बच्चा। उन्हें दोष नहीं लगता।

-यानी भगवान रखना भी एक झंझट ही है। वह हर बात का दंड देने लगता है।

-तर्क ठी है, बच्चा, पर भावना ग़लत है।

-स्वामीजी, जहां तक मैं जानता हूं, जनता के मन में इस समय गोरक्षा नहीं है, महंगाई और आर्थिक शोषण है। जनता महंगाई के खिलाफ़ आंदोलन करती है। वह वेतन और महंगाई भत्ता बढ़वाने के लिए हड़ताल करती है। जनता आर्थिक न्याय के लिए लड़ रही है। और इधर आप गो-रक्षा आंदोलन लेकर बैठ गये हैं। इसमें क्या तुक है?

-बच्चा, इसमें तुक है। देखो, जनता जब आर्थिक न्याय की मांग करती है, तब उसे किसी दूसरी चीज़ में उलझा देना चाहिए, नहीं तो वह ख़तरनाक हो जाती है। जनता कहती है-हमारी मांग है महंगाई बंद हो, मुनाफ़ाखोरी बंद हो, वेतन बढ़े, शोषण बंद हो, तब हम उससे कहते हैं कि नहीं, तुम्हारी बुनियादी मांग गोरक्षा है। बच्चा, आर्थिक क्रांति की तरफ़ बढ़ती जनता को हम रास्ते में ही गाय के खूंटे से बांध देते हैं। यह आंदोलन जनता को उलझाये रखने के लिए है।

-स्वामीजी, किसकी तरफ़ से आप जनता को उलझाये रखते हैं?

-जनता की मांग का जिन पर असर पड़ेगा, उनकी तरफ़ से। यही धर्म है। एक दृष्टांत देते हैं। एक दिन हज़ारो भूखे लोग व्यवसायी के गोदाम में भरे अन्न को लूटने के लिए निकल पड़े। व्यवसायी हमारे पास आया। कहने लगा-स्वामीजी, कुछ करिये। ये लोग तो मेरी सारी जमा-पूंजी लूट लेंगे। आप ही बचा सकते हैं। आप जो कहेंगे, सेवा करेंगे। बस बच्चा, हम उठे, हाथ में एक हड्डी ली और मंदिर के चबूतरे पर खड़े हो गये। जब वे हज़ारों भूखे गोदाम लूटने का नारा लगाते आये, तो मैंने उन्हें हड्डी दिखाई और ज़ोर से कहा- किसी ने भगवान के मंदिर को भ्रष्ट कर दिया। वह हड्डी किसी पापी ने मंदिर में डाल दी। विधर्मी हमारे मंदिर को अपवित्र करते हैं, हमारे धर्म को नष्ट करते हैं। हमें शरम आनी चाहिए। मैं इसी क्षण यहां उपवास करता हूं। मेरा उपवास तभी टूटेगा, जब मंदिर की फिर से पुताई होगी और हवन करके उसे पुन: पवित्र किया जाएगा। बस बच्चा, वह जनता आपस में ही लड़ने लगी। मैंने उनका नारा बदल दिया। जब वे लड़ चुके, तब मैंने कहा-धन्य है इस देश की धर्मप्राण जनता। धन्य हैं अनाज के व्यापारी सेठ अमुकजी। उन्होंने मंदिर की शुद्धि का सारा खर्च देने को कहा है। बच्चा, जिसका गोदाम लूटने वे भूखे जा रहे थे, उसकी जय बोलने लगे। बच्चा, यह है धर्म का प्रताप। अगर इस जनता को गो-रक्षा आंदोलन में न लगायेंगे तो यह बैंकों के राष्ट्रीयकरण का आंदोलन करेगी, तनख़्वाह बढ़वाने का आंदोलन करेगी, मुनाफ़ाखोरी के खिलाफ़ आंदोलन करेगी। उसे बीच में उलझाये रखना धर्म है, बच्चा।

-स्वामीजी, आपने मेरी बहुत ज्ञान-वृद्धि की। एक बात और बताइए। कई राज्यों में गोरक्षा के लिए कानून है। बाकी में लागू हो जाएगा। तब यह आंदोलन भी समाप्त हो जाएगा। आगे आप किस बात पर आंदोलन करेंगे?

-अरे बच्चा, आंदोलन के लिए बहुत विषय हैं। सिंह दुर्गा का वाहन है। उसे सरकस वाले पिंजरे में बंद कर रखते हैं और उससे खेल कराते हैं। यह अधर्म है। सब सरकसों के खिलाफ़ आंदोलन करके, देश के सारे सरकस बंद करा देंगे। फ़िर भगवान का एक अवतार मत्स्यावतार भी तो है। मछली भगवान का प्रतीक है। हम मछुआरों के खिलाफ़ आंदोलन छेड़ देंगे। सरकार का मत्स्यपालन विभाग बंद करवायेंगे।

-स्वामीजी, उल्लू लक्ष्मी का वाहन है। उसके लिए भी तो कुछ करना चाहिए।

-यह सब उसी के लिए तो कर रहे हैं, बच्चा। इस देश में उल्लू को कोई कष्ट नहीं है। वह मज़े में है।

इतने में गाड़ी आ गई। स्वामीजी उसमें बैठ कर चले गये। बच्चा वहीं रह गया।

शाही एक्सपोर्ट में महिला मज़दूरों की बेहोशी

फरीदाबाद (इंकलाबी मज़दूर केंद्र) 21 मई को सेक्टर-28, प्लांट सं. 15 ए मथुरा रोड पर स्थित शाही एक्सपोर्ट हाऊस के प्लांट में गर्मी और घुटन से भारी संख्या में कार्यरत महिलाएं बेहोश होने लगीं। उन्हें आनन-फानन में सर्वोदय अस्पताल में भर्ती कराया गया। शाही एक्सपोर्ट में समाचार लिखे जाने तक बेहोश होने वाली महिला मज़दूरों की संख्या 80 से ऊपर पहुंच गई है। कार्यरत बहुत सी महिलाएं सिरदर्द और बेतहाशा गर्मी की शिकायत लगातार कर रही थीं जिसे प्रबंधन ने सुनने की जरूरत नहीं समझी। लेकिन क्या ये बेहोशियां आग लगने के कारण धुएं से हुईं? क्या ये 'ऊपरी हवा' यानी प्रेतों की करतूतों से हुईं जिसके बारे में भी कहा गया। ये जानलेवा बेहोशियां कंपनी के कार्यस्थल पर वेंटिलेशन की समुचित व्यवस्था न होने की वजह से और उस गर्मी से निजात की कोई व्यवस्था नहीं होने से हुई हैं जो सैंकड़ों की संख्या में बिजली से चलने वाली मशीनों, प्रेसों और स्टीम प्रेसों (आयरन) से बढ़ जाती हैं। जहां तक प्रबंधकों का सवाल है, उन्होंने गर्मी से निजात पाने के लिए ए.सी.रूपी रक्षा कवच लगा रखा है। इससे उन्हें सर्दी और गर्मी की समस्या से निजात मिली रहती है। फरीदाबाद का पुलिस प्रशासन, स्वास्थ्य विभाग, सेफ़्टी विभाग, श्रम विभाग - कोई भी शाही एक्सपोर्ट के प्रबंधन के ख़िलाफ़ चूं करने तक को तैयार नहीं है।

मीडिया भी घुटन से हुई महिला श्रमिकों के स्वास्थ्य पर पड़े गंभीर असर पर मौन है। नौजवानों के एक संगठन 'इंकलाबी मज़दूर केंद्र' ने एक पर्चा निकाल कर इस गंभीर समस्या के मूल कारणों को उजागर करने का प्रयास किया। परंतु इस सच्चाई के उजागर होने से शाही एक्सपोर्ट के प्रबंधन ने झल्लाहट और बदहवासी में पर्चा बांट रहे इन नौजवानों पर अपने गुर्गों से हाथापाई करवाई और फिर इन्हें थाना सेक्टर-31 की पुलिस के हवाले कर दिया। पुलिस ने प्रबंधन की शह पर शाही एक्सपोर्ट के गेट पर पर्चा बांट रहे नौजवानों के साथ अभद्रता की और उन पर मज़दूरों को उकसाने का आरोप लगाया। सेक्टर-31 के पुलिस अधिकारी नरेश कुमार ने एक रोचक तर्क दिया कि यदि शाही एक्सपोर्ट में शोषण हो रहा है तो मज़दूर तो कोई बंधक नहीं हैं। वे नौकरी छोड़ सकते हैं। और चूंकि मज़दूर नौकरी छोड़ नहीं रहे तो इसका मतलब यह है कि शोषण नहीं हो रहा है। भारी संख्या में महिला मज़दूरों के बेहोश होने के पहले पांच से अधिक मज़दूर जो बेहोश हो गये थे, उनको अस्पताल भेजने के बजाय प्रबंधन ने उन्हें हिसाब दे कर और उनके कार्ड छीन कर घर का रास्ता दिखा दिया। ऐसा कंपनी के मज़दूरों ने स्वयं बताया है।

शाही एक्सपोर्ट के एक गार्ड ने बताया कि कंपनी ने रातोंरात लाखों रुपयों के कूलर लगाये हैं ताकि श्रम विभाग आदि के सम्मुख आरोपमुक्त हुआ जा सके। भारतीय पूंजीवाद ने अपना आर्थिक संकट मज़दूर वर्ग पर थोप दिया है। इसके चलते महंगाई, बदहाली और बेराज़गारी की शिकार महिला मज़दूर शाही एक्सपोर्ट जैसे संस्थानों में काम पर जाकर अपनी दिहाड़ी का इंतजाम करने के लिए मजबूर हैं, भले ही काम करने के दौरान उन्हें बेहोश ही क्यों न होना पड़े। भारतीय पूंजीपति वर्ग की मुनाफ़े की हवस इतनी बढ़ चुकी है कि वह मज़दूर को मशीन के किसी पुर्जे से अधिक कुछ नहीं समझता। एक्सपोर्ट हाऊसों में 15-15 घंटों तक लगातार महिला मज़दूरों द्वारा श्रम करवाया जाना पूंजीपति वर्ग की इसी हवस और अमानवीयता को दिखाता है। ए.सी. में बैठ कर कोल्ड ड्रिंक की चुस्कियां लेने वाला प्रबंधन बेहोशी को जन्म दे रहे घुटन भरे फ्लोर पर दिन में एक-दो बार चक्कर लगा लेना ही पर्याप्त समझता है। स्टीम प्रेस से जूझते प्रेस मैनों के पास प्रबंधक वर्ग अपनी महिलाओं को नहीं भेजता, क्योंकि वे मजबूर या तो बनियान मात्र पहने होते हैं या वह भी उन्हें उतार देनी होती है। अब बदहवासी और मौत से प्रबंधन किस-किसको दूर रखेगा?

शाही एक्सपोर्ट के एक गार्ड ने बताया कि कंपनी ने रातोंरात लाखों रुपयों के कूलर लगाये हैं ताकि श्रम विभाग आदि के सम्मुख आरोपमुक्त हुआ जा सके। भारतीय पूंजीवाद ने अपना आर्थिक संकट मज़दूर वर्ग पर थोप दिया है। इसके चलते महंगाई, बदहाली और बेराज़गारी की शिकार महिला मज़दूर शाही एक्सपोर्ट जैसे संस्थानों में काम पर जाकर अपनी दिहाड़ी का इंतजाम करने के लिए मजबूर हैं, भले ही काम करने के दौरान उन्हें बेहोश ही क्यों न होना पड़े।